

25 MARCH - THE HINDU

(Disinformation is everywhere in India)

संदर्भ

- लोकसभा चुनावों के साथ यह महत्वपूर्ण है कि भारतीयों के पास वोट देने के पहले विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध हो।
- ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा भारत में एक सर्वेक्षण किया गया। जिसके अनुसार भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन मिलने वाली सूचना वास्तविक है या नकली यह समझ पाना मुश्किल होता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पुलवामा हमले के बाद सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप द्वारा भ्रामक जानकारी उपलब्ध कराई गई, जिसे हिंसा व नफरत की भावना को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रसारित किया गया था। बीबीसी के एक पत्रकार द्वारा कहा गया कि पहली बार किसी एक घटना पर इतनी अधिक मात्रा में गलत भ्रामक सूचनाएं प्रसारित की गईं।
- भ्रामक जानकारी का मुख्य कारण सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप है। सर्वेक्षण के अनुसार 52% लोगों का कहना था कि उन्हें जो सूचनाएं प्राप्त होती हैं वो फेसबुक या व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त होती हैं।
- फेसबुक, गूगल और ट्विटर जैसी कंपनियां भारतीय मीडिया का केन्द्रीय हिस्सा बन चुकी हैं। जिससे भ्रामक जानकारियों का सामना करना पड़ रहा है।
- विघटन केवल सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की समस्या नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक व व्यवसायिक कारणों से प्रसारित की गई सूचनाओं व समाचार की भी समस्या है।
- सर्वेक्षण के अनुसार, खराब पत्रकारिता भी भ्रामक जानकारी को बढ़ावा देती है। जिसमें तथ्यात्मक गलतियाँ, अशुद्धियाँ व रोचकता को बढ़ावा देना शामिल है।
- राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए तथ्यों को घुमाया जाता है यह भ्रामक जानकारी को बढ़ावा देता है।
- इंटरनेट पर सूचनाओं की विशाल सामग्री उपलब्ध है, इसमें कौन-सी सूचना असली है और कौन-सी फेक न्यूज इसका निर्धारण करना मुश्किल होता है।
- प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के अनुसार, पेड न्यूज की घटना भी एक गंभीर समस्या है। व्यक्तिगत पत्रकारों और मीडिया कंपनियों में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण पेड न्यूज जैसी समस्याओं को बढ़ावा मिल रहा है।
- प्रेस काउंसिल ने यह निष्कर्ष निकाला कि भारत के चौथे स्तंभ अर्थात् मीडिया के कमजोर होने से लोकतंत्र कमजोर हो रहा है।
- मीडिया की विघटनकारी प्रवृत्ति के कारण लोगों का विभिन्न संस्थाओं तथा राजनेताओं व राजनीतिक दलों पर भरोसा कम हुआ है। व्यक्तियों द्वारा अधिकांश समाचारों व न्यूज पर पूर्ण विश्वास नहीं किया है।

समाधान

- इन भ्रामक जानकारियों के समाधान हेतु ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे मैसेजिंग ऐप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम को अपनी सामग्री मॉडरेशन में सुधार करना चाहिए तथा फेक न्यूज को प्रसारित होने से रोकना चाहिए।
- राजनीतिक दलों व उनका समर्थन करने वाले कार्यकर्ताओं को फेक न्यूज फैलाने से रोकने चाहिए तथा निष्पक्ष व स्वतंत्र पत्रकारिता को बढ़ावा देना चाहिए।
- भारतीय समाचार मीडिया को जनता का विश्वास हासिल करने हेतु जानकारियों को उचित रूप में प्रस्तुत करना होगा, जो न केवल लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, बल्कि उनके विश्वास के योग्य हो।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्र. भारत विश्व में सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का प्रतिनिधित्व करता है, ऐसे में फेक न्यूज व पेड न्यूज जैसी समस्याओं के कारण मीडिया का कमजोर होना, लोकतंत्र को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। विश्लेषण कीजिए?

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्र. निम्न कथनों पर विचार कीजिए-

1. प्रेस परिषद, मीडिया से प्राप्त या मीडिया के विरुद्ध प्राप्त शिकायतों पर विचार करती है।
2. वर्तमान में ऑनलाइन मीडिया न्यूज, डिजिटल ब्राडकास्टिंग के लिए कोई नियामक ढांचा नहीं है।
3. भारतीय प्रेस परिषद् सांविधिक स्वायत्तशासी संगठन है जो प्रेस की स्वतंत्र हेतु कार्य करता है। उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) 2 और 3
- (c) 1 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

प्रारंभिक परीक्षा का उत्तर (d)

(Another Look At Fiscal Transfer)

• संघवाद एक पुरानी अवधारणा है, जो मुख्य रूप से राजनीतिक अधिक है। सरकार की दक्षता इसकी संरचना व कारणों पर निर्भर करती है। बड़े देशों ने महसूस किया कि केवल संघीय संरचना ही विभिन्न क्षेत्र के लोगों की आवश्यकताओं को कुशलतापूर्वक पूरा कर सकती है। विभिन्न क्षेत्रों की प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं।

• स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश में प्रांतीय स्वायत्तता को भी स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग माना जाता था। हालांकि आजादी के बाद कई समस्याओं जिसमें रक्षा आंतरिक सुरक्षा शामिल थी, ने संघवाद को लागू करने हेतु बल दिया जिसमें केन्द्र अधिक महत्व रखता है। आजादी के बाद कई शक्तिशाली प्रांतीय नेताओं के केन्द्र में शामिल होने से केन्द्रीकरण की प्रक्रिया को बल मिला। देशव्यापी स्तर पर आर्थिक नियोजन ने इस केन्द्रीकरण प्रक्रिया में मदद की।

राजकोषीय संघवाद

• राजकोषीय संघवाद राजनीतिक संघवाद का आर्थिक पक्ष है। राजकोषीय संघवाद सरकार के विभिन्न स्तरों के कार्यों को करने के लिए उपयुक्त राजकोषीय साधनों से संबंधित है।

• आमतौर पर माना जाता है कि केन्द्र सरकार को राष्ट्रीय सार्वजनिक वस्तुओं को प्रदान करना चाहिए जो पूरी आबादी को सेवाएं प्रदान करता है। उप-राष्ट्रीय सरकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसी वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करें जिनकी खपत उनके अधिकार क्षेत्र तक सीमित है।

• राजकोषीय संघवाद में महत्वपूर्ण पक्ष राजकोषीय साधनों का निर्माण है जो सरकार के विभिन्न स्तरों को उनके कार्यों को पूरा करने में सक्षम करेगा।

• इस हेतु सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा करों का निर्धारण करना है। इसका निर्धारण वस्तुओं व संसाधनों की गतिशीलता पर आधारित होता है।

• आमतौर पर यह तर्क दिया जाता है कि राज्य सरकारों को गैर-लाभकारी करों और अंतर्राज्यीय इकाइयों पर करों से बचना चाहिए अर्थात् केन्द्र सरकार पर गैर-लाभकारी करों और अंतर्राज्यीय संसाधनों पर कर लगाने की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

• एक संविधान में सरकार के विभिन्न स्तरों पर करों के निर्धारण की योजना मुश्किल कार्य है।

• उदाहरण के लिए अमेरिका और कनाडा में संघीय और राज्य सरकार दोनों के पास आयकर लगाने का अधिकार है। इसके विपरीत भारत में केवल केन्द्र सरकार द्वारा आयकर लगाया जाता है, जो राज्यों के साथ साझा किया जाता है।

• वित्त आयोग के द्वारा केन्द्र व राज्यों के बीच करों का बंटवारा किया जाता है। योजना आयोग के

माध्यम से भी राज्यों को अनुदान देने की सिफारिश की जाती थी।

- चौदहवें वित्त आयोग द्वारा संसाधनों के आबंटन में राज्यों की हिस्सेदारी को बढ़ाकर 42% किया गया। आयोग ने तर्क दिया कि यह निर्णय समग्र हस्तांतरण को प्रभावित नहीं करता, बल्कि केवल बिना शर्त हस्तांतरण के हिस्से को बढ़ाता है। इस आवंटन पर दो सवाल उठते हैं पहला, कुल हस्तांतरण का निर्धारित किस तरह किया जाए तथा दूसरा, क्या सभी हस्तांतरण वित्त आयोग द्वारा किए जाएंगे?

- चौदहवें वित्त आयोग ने माना कि योजना आयोग द्वारा कुछ हस्तांतरण किये जा रहे थे उन विचलनों को भी ध्यान में रखा गया था। योजना आयोग को नीति आयोग द्वारा प्रतिस्थापित किया गया जो संसाधनों के आबंटन की शक्तियों का थिंक-टैंक था।

इस संबंध में कुछ सुझाव

- संवैधान में संशोधन करके राज्यों को दिए जाने वाले करों को निश्चित किया जा सकता है।
- साझा किए जाने वाले कर में सेस/अधिभार भी शामिल होने चाहिए। उपकर और अधिभार सहित 42% कर योग्य करों का अनुपात को निर्धारित कर उचित लगता है।
- अमेरिका और कनाडा की तरह कुछ सीमाओं के साथ राज्यों को व्यक्तिगत आय पर कर लगाने की अनुमति देना चाहिए।
- केन्द्र व राज्यों के बीच करों से संबंधित शक्तियों के बीच समायोजन होना चाहिए। भारत के संदर्भ में इन विकल्पों को अपनाने से केन्द्र व राज्यों के बीच होने वाले मतभेदों से बचने के लिए संवैधानिक रूप से अनुपात निर्धारित करना आसान विकल्प होगा।
- शक्तियों के समान वितरण हेतु भारत में राज्यों के बीच बराबरी लाने की कुछ सीमाएं हैं, विभिन्न राज्यों की समस्याएं प्राथमिकताएं अलग-अलग हैं, इसलिए सभी के लिए समान मापदण्ड निर्धारित करना उचित नहीं होगा। इस संदर्भ में बिना शर्त स्थानांतरण में वृद्धि के मापदंडों में एक संतुलन होना आवश्यक है।
- राज्यों के लिए कर अनुपात या राजस्व को उचित विभाजन के लिए संविधान संशोधन करना चाहिए।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्र. राजकोषीय संघवाद, आर्थिक न्याय को उपलब्ध कराने हेतु कल्याणकारी राज्य की अवधारणा है। क्या केन्द्र-राज्य संबंधों के सुदृढीकरण के साथ यह प्रतिस्पर्धात्मक बाजारवाद को हतोत्साहित करता प्रतीत होता है? चर्चा कीजिए।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्र. निम्न कथनों पर विचार कीजिए-

1. वित्त आयोगों की अनुशंसाओं के अनुरूप राज्यों को मिला राजस्व, संसाधनों को साझा करने का परिणाम है न कि हस्तांतरण का।
 2. शहरी क्षेत्रों के स्थानीय निकाय कुल राजस्व का लगभग 50% हिस्सा अपने स्रोतों से जुटाते हैं।
 3. राज्य और स्थानीय निकाय काफी हद तक राजस्व संसाधनों के अंतरण पर निर्भर रहते हैं।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
- (a) 1 और 2
 - (b) 2 और 3
 - (c) 1 और 3
 - (d) उपर्युक्त सभी

प्रारंभिक परीक्षा का उत्तर (c)

